IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वैश्विक रुझान और स्थानीय अनुकूलन के सन्दर्भ में ओटीटी सामग्री के सांस्कृतिक प्रभाव का अध्ययन

Sagar Kanojia, Research Scholar,Bhaskar Institute Of Mass Communication And Journalism, Bundelkhand University, Jhansi.

Dr. Kaushal Tripathi, Assistant Professor, Bhaskar Institute Of Mass Communication And Journalism, Bundelkhand University, Jhansi.

सारांश

अध्ययन वैश्विक रुझानों और स्थानीय अनुकूलन के संदर्भ में ओवर-द-टॉप (OTT) सामग्री के सांस्कृतिक प्रभाव की पड़ताल करता है। भारत में मनोरंजन के एक नए व्यक्तिगत माध्यम के रूप में OTT प्लेटफ़ॉर्म के उभरने के साथ, यह शोध इस बात की जांच करता है कि ये प्लेटफ़ॉर्म विभिन्न क्षेत्रों में सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक व्यवहार और भाषाई अनुकूलन को कैसे प्रभावित करते हैं। शोध का उद्देश्य वैश्विक सामग्री रुझानों और स्थानीय सांस्कृतिक प्राथमिकताओं के बीच OTT प्लेटफ़ॉर्म द्वारा बनाए गए संतुलन को समझना है, OTT सामग्री उपभोग के कारण भाषाई पैटर्न, सांस्कृतिक पहचान अभिव्यक्तियों और सामाजिक व्यवहारों में अवलोकनीय परिवर्तनों की जांच करना है। अध्ययन यह भी विचार करता है कि कैसे OTT प्लेटफ़ॉर्म की सामग्री क्यूरेशन और अनुशंसा एल्गोरिदम स्थानीय और वैश्विक दोनों स्तरों पर सांस्कृतिक कथाओं को आकार देते हैं, जो तेजी से विकसित हो रहे OTT परिदृश्य में वैश्विक और स्थानीय सांस्कृतिक गतिशीलता के बीच गतिशील बातचीत में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

यह शोध स्थानीय संस्कृतियों पर इन वैश्विक रुझानों के प्रभाव के बारे में आवश्यक प्रश्न उठाते हुए वैश्विक सामग्री को बढ़ावा देने में OTT प्लेटफ़ॉर्म की महत्वपूर्ण भूमिका को समझने में योगदान देता है। निष्कर्ष सांस्कृतिक आदान-प्रदान, अनुकूलन और डिजिटल मीडिया के युग में सांस्कृतिक समरूपता या संकरण की क्षमता की जटिलताओं को उजागर करते हैं।

कीवर्ड: ओटीटी प्लेटफॉर्म, सांस्कृतिक प्रभाव, वैश्विक रुझान, स्थानीय अनुकूलन, सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक व्यवहार, भाषाई पैटर्न, सामग्री संग्रह, डिजिटल मीडिया, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, संकरण।

परिचय

ओवर-द-टॉप (ओटीटी) प्लेटफॉर्म भारत में "मनोरंजन के नए व्यक्तिगत माध्यम" के रूप में उभर रहे हैं।। ओवर-द-टॉप तकनीक ने कंटेंट को डिलीवर करने और उसका उपभोग करने के अनिभव को बदल दिया है, खास तौर पर वीडियो स्ट्रीमिंग के क्षेत्र में। पारंपरिक प्रसारण विधियों के विपरीत, ओटीटी पारंपरिक वितरण चैनलों को दरकिनार कर सीधे इंटरनेट के माध्यम से दर्शकों तक कंटेंट पहुंचाता है। इस परिवर्तन ने कई ओटीटी वीडियो स्ट्रीमिंग प्लेटफ़ॉर्म को जन्म दिया है जो विविध दर्शकों को ध्यान में रखते हुए उन्हें अभूतपूर्व स्तर की पसंद, सुविधा और नियंत्रण प्रदान करते हैं। "ओवर-द-टॉप" शब्द का इस्तेमाल शुरू में उन उपकरणों के लिए किया जाता था जो उपयोगकर्ताओं को इंटरनेट से सीधे सामग्री तक पहुँचने के लिए पारंपरिक केबल या सैटेलाइट टेलीविज़न सेवाओं को बायपास करने में सक्षम बनाते थे। हालाँकि, हाई-स्पीड इंटरनेट के आगमन, वीडियो कम्प्रेशन तकनीकों में प्रगति और स्मार्ट उपकरणों के प्रसार के साथ, ओटीटी सामग्री वितरण का एक प्रमुख तरीका बन गया है। वर्ष 2000 के दशक की शुरुआत में वीडियो-ऑन-डिमांड सेवाओं का उदय हुआ, जैसे कि नेटफ्लिक्स, जिसने शुरुआत में मेल द्वारा डीवीडी किराए पर उपलब्ध कराया। हालाँकि, जैसे-जैसे ब्रॉडबैंड इंटरनेट अधिक व्यापक होता गया, इन

सेवाओं ने सीधे उपयोगकर्ताओं के उपकरणों पर सामग्री स्ट्रीमिंग करना शुरू कर दिया। इसने पारंपरिक टेलीविज़न के एक व्यवहार्य विकल्प के रूप में ओटीटी की शुरुआत को चिह्नित किया।

नेटफ्लिक्स, अमेज़ॅन प्राइम वीडियो और हॉटस्टार जैसे ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म हाल के वर्षों में घरेलू नाम बन गए हैं। ये प्लेटफ़ॉर्म मूवीज़, टीवी शो, डॉक्यूमेंट्री और ओरिजिनल सीरीज़ सहित कई तरह की सामग्री प्रदान करते हैं, जो ऑन डिमांड स्ट्रीमिंग के लिए उपलब्ध हैं। पारंपरिक टेलीविज़न के विपरीत, ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म उपयोगकर्ताओं को कभी भी, कहीं भी और इंटरनेट कनेक्शन वाले किसी भी डिवाइस पर सामग्री तक पहुँचने की अनुमति देते हैं। विशाल और विविध कंटेंट लाइब्रेरी के साथ इस सुविधा ने ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म को दुनिया भर के उपभोक्ताओं के लिए एक लोकप्रिय विकल्प बना दिया है। स्मार्ट टीवी, स्मार्टफ़ोन, टैबलेट और अन्य कनेक्टेड डिवाइस के प्रसार ने ओटीटी सेवाओं के तेज़ विकास को सुगम बनाया। इन उपकरणों ने, उपयोगकर्ता के अनुकूल इंटरफेस और ऐप्स के साथ मिलकर, उपभोक्ताओं को कहीं से भी, किसी भी समय सामग्री तक पहुँचने की अनुमति दी, जिससे ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म की अपील में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। ओटीटी तकनीक में सामग्री वितरण नेटवर्क की भूमिका को कम करके नहीं आंका जा सकता। सामग्री वितरण नेटवर्क दुनिया भर के कई सर्वरों में वीडियो सामग्री को कैश करके, विलंबता को कम करके और एक सहज स्ट्रीमिंग अनुभव सुनिश्चित करके वीडियो सामग्री की कुशल डिलीवरी को सक्षम करते हैं। सामग्री वितरण नेटवर्क का विकास ओटीटी सेवाओं की मापनीयता में सहायक रहा है, जिससे प्लेटफ़ॉर्म एक साथ लाखों उपयोगकर्ताओं को सेवा प्रदान कर सकते हैं।

आधुनिक ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म वैयक्तिकृत सामग्री अनुशंसाएँ प्रदान करने के लिए उन्नत एल्गोरिदम और डेटा एनालिटिक्स का लाभ उठाते हैं, जिससे उपयोगकर्ता जुड़ाव बढ़ता है। इसके अतिरिक्त, लाइव चैट, मल्टी-एंगल व्यू और उपयोगकर्ता-जनित सामग्री जैसी इंटरैक्टिव सुविधाओं के एकीकरण ने ओटीटी अनुभव को और समृद्ध किया है। ओवर-द-टॉप (ओटीटी) प्लेटफॉर्म ने सामग्री की विविधता से उपयोगकर्ताओं को परिचित करवाया है। इस परिवर्तन के सबसे उल्लेखनीय परिणामों में से एक बहुभाषी सामग्री का प्रसार है, जिससे दर्शकों को विभिन्न भाषाओं में फिल्मों, श्रृंखलाओं और वृत्तचित्रों की एक विशाल श्रृंखला तक पहुंचने में मदद मिलती है। ऐतिहासिक रूप से, मीडिया वितरण अक्सर भौगोलिक और भाषाई बाधाओं से सीमित था। हालांकि, ओटीटी प्लेटफॉर्म की वैश्विक पहुंच ने इन बाधाओं को तोड़ दिया है, जिससे कंटेंट क्रिएटर्स को अंतरराष्ट्रीय दर्शकों को लक्षित करने में मदद मिली है।

नेटफ्लिक्स, अमेज़ॅन प्राइम और डिज़नी+ जैसे ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म ने 190 से अधिक देशों में अपनी पहुँच का विस्तार किया है, जिससे विविध दर्शकों को पूरा करने के लिए कई भाषाओं में सामग्री को शामिल करना आवश्यक हो गया है। इस वैश्वीकरण ने अंग्रेजी के अलावा अन्य भाषाओं में सामग्री के उत्पादन और अधिग्रहण को प्रोत्साहित किया है, जिससे उन्हें व्यापक दर्शकों के लिए सुलभ बनाया गया है। सबटाइटल और डबिंग तकनीकों में प्रगति ने बहुभाषी सामग्री के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उच्च-गुणवत्ता वाले सबटाइटल और डबिंग दर्शकों को मूल कथा के सार को खोए बिना अपनी पसंदीदा भाषा में सामग्री का आनंद लेने की अनुमति देते हैं, जिससे विदेशी भाषा की सामग्री अधिक सुलभ और आकर्षक बन जाती है। जैसे-जैसे दर्शक अधिक वैश्वीकृत होते जा रहे हैं, ऐसे कंटेंट की मांग बढ़ रही है जो विविध सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को दर्शाता है। ओटीटी प्लेटफॉर्म ने कई भाषाओं में कंटेंट तैयार करके और उसका निर्माण करके दर्शकों को अलग-अलग सांस्कृतिक संदर्भों की कहानियाँ पेश की हैं और उन्हें नई कहानियों का पता लगाने का मौका दिया है।

ओटीटी प्लेटफॉर्म कंटेंट के स्थानीयकरण में तेजी से निवेश कर रहे हैं, कंटेंट को विशिष्ट क्षेत्रों की सांस्कृतिक बारीकियों और प्राथमिकताओं के अनुरूप ढाल रहे हैं। इसमें संवादों का अनुवाद करना, सांस्कृतिक संदर्भों को संशोधित करना और यहाँ तक कि स्थानीय दर्शकों के साथ तालमेल बिठाने के लिए कहानी को बदलना भी शामिल है, जिससे बहुभाषी कंटेंट की प्रासंगिकता और अपील बढ़ जाती है। ओटीटी प्लेटफॉर्म पर बहुभाषी कंटेंट की उपलब्धता ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर गहरा प्रभाव डाला है, जिससे क्रॉस-कल्चरल समझ और प्रशंसा को बढ़ावा मिला है।

बहुभाषी कंटेंट दर्शकों को विभिन्न संस्कृतियों की परंपराओं, मूल्यों और जीवन शैली का अनुभव करने में सक्षम बनाता है, जिससे सांस्कृतिक अंतर को पाटा जा सकता है। उदाहरण के लिए, दक्षिण कोरियाई नाटकों (के-ड्रामा) और जापानी एनीमे की वैश्विक लोकप्रियता ने दर्शकों को पूर्वी एशियाई संस्कृति से परिचित कराया है, जिससे इस क्षेत्र के रीति-रिवाजों, फैशन और संगीत में रुचि पैदा हुई है। ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म ने कम-ज्ञात या लुप्तप्राय भाषाओं में सामग्री प्रदर्शित करके हाशिए पर पड़े समुदायों को आवाज़ दी है। यह न केवल भाषाई विविधता को संरक्षित करता है, बल्कि कम प्रतिनिधित्व वाली संस्कृतियों को अपनी कहानियों को वैश्विक दर्शकों के साथ साझा करने की अनुमति देकर समावेशिता को भी बढ़ावा देता है। नेटफ्लिक्स जैसे प्लेटफ़ॉर्म स्वाहिली, योरूबा और क्वेशुआ जैसी भाषाओं में सामग्री को सबसे आगे लाने में सहायक रहे हैं।

ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म पर विदेशी भाषा की सामग्री के संपर्क ने अनजाने में भाषा सीखने को बढ़ावा दिया है। दर्शक अक्सर अपने द्वारा देखी जाने वाली सामग्री से वाक्यांश और भाव सीखते हैं, जिससे नई भाषाएँ सीखने में रुचि पैदा होती है। यह विशेष रूप से स्पेनिश भाषा की सामग्री जैसे 'ला कासा डे पैपेल' (मनी हीस्ट) के उदय के साथ स्पष्ट हुआ है, जिसने कई दर्शकों को स्पेनिश सीखने के लिए प्रेरित किया। बहुभाषी सामग्री की सफलता ने अंतर्राष्ट्रीय सह-निर्माण में भी वृद्धि की है, जहाँ विभिन्न देशों के निर्माता वैश्विक दर्शकों को आकर्षित करने वाली सामग्री बनाने के लिए सहयोग करते हैं। इन सहयोगों के परिणामस्वरूप सांस्कृतिक तत्वों का सम्मिश्रण होता है, जिससे ऐसी सामग्री बनती है जो सीमाओं के पार गूंजती है और प्रत्येक भाग लेने वाली संस्कृति की समृद्धि को प्रदर्शित करती है।

ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म विविध कथाओं को बढ़ावा देने और विभिन्न संस्कृतियों और समुदायों के बेहतर प्रतिनिधित्व में सहायक रहे हैं। ओटीटी प्लेटफॉर्म ने कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों के अनुभवों और कहानियों को दर्शाने वाली सामग्री की एक विस्तृत श्रृंखला पेश करके रूढ़ियों को चुनौती देने और मुख्यधारा के मीडिया के दायरे को व्यापक बनाने में मदद की है। विविधता और समावेश की ओर इस प्रवृत्ति का वैश्विक सांस्कृतिक गतिशीलता पर गहरा प्रभाव पड़ा है, जिससे क्रॉस-कल्चरल समझ और सहानुभूति को बढ़ावा मिला है। ओटीटी प्लेटफॉर्म से जुड़े सबसे उल्लेखनीय रुझानों में से एक बिंज-वॉचिंग का उदय है। एक शो के पूरे सीज़न को एक साथ स्ट्रीम करने की क्षमता ने दर्शकों के कंटेंट देखने के तरीके को बदल दिया है, जिससे नई देखने की आदतें और सामाजिक व्यवहार सामने आए हैं। इस प्रवृत्ति ने कंटेंट प्रोडक्शन को भी प्रभावित किया है, जिसमें क्रिएटर अक्सर शो को अधिक धारावाहिक और व्यसनी बनाने के लिए डिज़ाइन करते हैं, जिससे दर्शकों को एक बार में कई एपिसोड देखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

ओटीटी प्लेटफॉर्म ने वैश्विक सामग्री को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, उन्होंने स्थानीय संस्कृतियों पर इन वैश्विक रुझानों के प्रभाव के बारे में महत्वपूर्ण सवाल भी उठाए हैं। अंतरराष्ट्रीय सामग्री की व्यापक उपलब्धता सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के समरूपीकरण की ओर ले जा सकती है, क्योंकि स्थानीय दर्शक वैश्विक रुझानों का तेजी से उपभोग और अपना रहे हैं। हालाँकि, इस प्रभाव को सांस्कृतिक आदान-प्रदान के रूप में भी देखा जा सकता है, जहाँ वैश्विक रुझानों को स्थानीय सांस्कृतिक प्रथाओं में अनुकूलित और एकीकृत किया जाता है। स्थानीय संस्कृतियाँ अक्सर वैश्विक सामग्री को अपने सांस्कृतिक संदर्भों में फिट करने के लिए अनुकूलित करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक और स्थानीय तत्वों का संकरण होता है। उदाहरण के लिए, कोरियाई पॉप संस्कृति (के-पॉप) और नाटकों का प्रभाव विभिन्न देशों में स्पष्ट रहा है, जहाँ स्थानीय दर्शकों ने कोरियाई फैशन, संगीत और सौंदर्य मानकों के पहलुओं को अपनी सांस्कृतिक प्रथाओं में शामिल किया है। अनुकूलन की यह प्रक्रिया वैश्विक रुझानों और स्थानीय सांस्कृतिक पहचान के बीच गतिशील अंतर्क्रिया को दर्शाती है।

सांस्कृतिक समरूपता की संभावित चुनौतियों का समाधान करने के लिए, ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म ने स्थानीय संस्कृतियों, भाषाओं और कथाओं को प्रतिबिंबित करने वाली मूल सामग्री का निर्माण करते हुए सामग्री स्थानीयकरण में तेज़ी से निवेश किया है। इस प्रवृत्ति ने क्षेत्र-विशिष्ट हिट का उदय किया है जो स्थानीय दर्शकों के साथ दृढ़ता से प्रतिध्वनित होते हैं और अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों को भी आकर्षित करते हैं। उदाहरणों में सेक्रेड गेम्स जैसी भारतीय सीरीज़ और अटैक ऑन टाइटन जैसी जापानी एनीमे शामिल हैं, जिन्होंने अपनी सांस्कृतिक उत्पत्ति में गहराई से निहित रहते हुए वैश्विक ध्यान आकर्षित किया है। ओटीटी सामग्री की वैश्विक पहुँच में सामाजिक व्यवहार और सांस्कृतिक मानदंडों को प्रभावित करने की शक्ति है। उदाहरण के लिए, वैश्विक सामग्री में लैंगिक समानता, एलजीबीटीक्यू+ अधिकार और पर्यावरण चेतना जैसे प्रगतिशील सामाजिक मूल्यों का चित्रण, सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित कर सकता है और विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों में जनमत को आकार दे सकता है। इसके विपरीत, पारंपरिक या रूढ़िवादी मूल्यों को पुष्ट करने वाली सामग्री का वैश्विक प्रसार स्थानीय संस्कृतियों पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है।

वैश्विक रुझानों और स्थानीय अनुकूलन के संदर्भ में ओटीटी सामग्री के सांस्कृतिक प्रभाव की हमारी जांच का मार्गदर्शन करने के लिए, यह शोध पत्र कई महत्वपूर्ण प्रश्नों को संबोधित करेगा। विशेष रूप से, हम यह पता लगाएंगे कि ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म वैश्विक सामग्री रुझानों और स्थानीय सांस्कृतिक प्राथमिकताओं के बीच संतुलन कैसे बनाते हैं, और ओटीटी सामग्री की खपत के कारण भाषाई पैटर्न, सांस्कृतिक पहचान अभिव्यक्ति और सामाजिक व्यवहार में अवलोकन योग्य परिवर्तनों की जांच करते हैं। इसके अतिरिक्त, हम इस बात की जांच करेंगे कि स्थानीय दर्शक ओटीटी सामग्री में प्रस्तुत वैश्विक रुझानों को किस हद तक अपनाते हैं, और यह अनुकूलन उनकी सांस्कृतिक प्रथाओं में कैसे प्रकट होता है। इसके अलावा, हम सांस्कृतिक प्रदर्शन और प्राथमिकताओं पर ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म के कंटेंट क्यूरेशन और अनुशंसा एल्गोरिदम के प्रभाव पर विचार करेंगे, साथ ही स्थानीय और वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक आख्यानों को आकार देने या मजबूत करने में ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म द्वारा मूल प्रस्तुतियों की

भूमिका पर भी विचार करेंगे। ये शोध प्रश्न तेजी से विकसित हो रहे ओटीटी परिदृश्य में वैश्विक और स्थानीय गतिशीलता के बीच जटिल अंतर्क्रिया को समझने के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करेंगे।

शोध का उद्देश्य और महत्व

इस शोध का प्राथमिक उद्देश्य वैश्विक रुझानों और स्थानीय अनुकूलन के संदर्भ में ओटीटी सामग्री के सांस्कृतिक प्रभाव की जांच करना है। इंटरनेट की बढ़ती पहुंच और ओटीटी प्लेटफॉर्म के प्रसार के साथ, यह समझने की आवश्यकता है कि ये प्लेटफॉर्म विभिन्न क्षेत्रों में सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक व्यवहार और भाषाई अनुकूलन को कैसे प्रभावित करते हैं। इस शोध का महत्व इस बात में निहित है कि यह उन तरीकों के बारे में जानकारी प्रदान करने की क्षमता रखता है जिनसे वैश्विक मीडिया सामग्री का स्थानीय दर्शकों द्वारा उपभोग और व्याख्या की जाती है, और यह कैसे बदले में सांस्कृतिक मानदंडों और मूल्यों को आकार देता है।

साहित्य की समीक्षा

ओटीटी सामग्री के सांस्कृतिक प्रभाव पर अभी शोध अपने शुरूआती चरण में है, लेकिन कई अध्ययन और सिद्धांत इस शोध के लिए आधार प्रदान करते हैं। यह खंड इस विषय पर पिछले अध्ययनों और संबंधित सिद्धांतों की समीक्षा करता है जो ओटीटी प्लेटफार्मों के संदर्भ में वैश्विक रुझानों और स्थानीय अनुकूलन के विश्लेषण के लिए प्रासंगिक हैं।

कई अध्ययनों ने स्थानीय संस्कृतियों पर वैश्विक मीडिया सामग्री के प्रभाव का पता लगाया है। उदाहरण के लिए, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद की अवधारणा, जो यह सुझाव देती है कि प्रमुख संस्कृतियाँ, विशेष रूप से पश्चिम से, मीडिया सामग्री के माध्यम से कम प्रमुख संस्कृतियों पर अपने मूल्यों और मानदंडों को लागू करती हैं, टेलीविजन और फिल्म के संदर्भ में व्यापक रूप से चर्चा की गई है। ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म के उदय के साथ, इस अवधारणा ने नए सिरे से ध्यान आकर्षित किया है, क्योंकि ये प्लेटफ़ॉर्म पश्चिमी देशों की सामग्री को दुनिया भर के दर्शकों तक पहुँचाते हैं।

स्ट्रॉबहार (2007) द्वारा किया गया एक महत्वपूर्ण अध्ययन "सांस्कृतिक निकटता" की घटना पर प्रकाश डालता है, जहाँ दर्शक ऐसी सामग्री पसंद करते हैं जो सांस्कृतिक और भाषाई रूप से उनके अपने अनुभवों के करीब हो। हालाँकि, ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म के आगमन के साथ, दर्शकों द्वारा विभिन्न संस्कृतियों की सामग्री का उपभोग करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, जिससे वैश्विक और स्थानीय प्रभावों का मिश्रण हो रहा है। इवाबुची (2002) द्वारा किया गया एक अन्य अध्ययन "ग्लोकलाइज़ेशन" की अवधारणा पेश करता है, जहाँ वैश्विक मीडिया सामग्री को स्थानीय संस्कृतियों के अनुकूल बनाया जाता है, जिससे सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का एक संकर रूप बनता है।

वैश्विक रुझानों और स्थानीय अनुकूलन के संदर्भ में संबंधित सिद्धांत और मॉडल

ओटीटी सामग्री के सांस्कृतिक प्रभाव को समझने के लिए कई सिद्धांत और मॉडल प्रासंगिक हैं। सांस्कृतिक साम्राज्यवाद, सांस्कृतिक निकटता और ग्लोकलाइज़ेशन जैसे सिद्धांत यह विश्लेषण करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करते हैं कि मीडिया सामग्री में वैश्विक रुझान स्थानीय संस्कृतियों को कैसे प्रभावित करते हैं और ये संस्कृतियाँ ऐसे प्रभावों के अनुकूल कैसे होती हैं।

1. सांस्कृतिक साम्राज्यवाद: यह सिद्धांत यह मानता है कि प्रमुख संस्कृतियों, विशेष रूप से पश्चिमी देशों का मीडिया, स्थानीय संस्कृतियों को अभिभूत और समरूप बना सकता है। पश्चिमी सामग्री के अपने विशाल पुस्तकालयों के साथ ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म संभावित रूप से सांस्कृतिक समरूपीकरण की ओर ले जा सकते हैं।

2. सांस्कृतिक निकटता: स्ट्रॉबार (2007) के सांस्कृतिक निकटता के सिद्धांत से पता चलता है कि दर्शकों द्वारा ऐसी सामग्री का उपभोग करने की अधिक संभावना होती है जो सांस्कृतिक और भाषाई रूप से उनके अपने अनुभवों के करीब होती है। हालाँकि, ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म की वैश्विक पहुँच इस धारणा को चुनौती देती है क्योंकि दर्शक तेजी से विविध सांस्कृतिक सामग्री के संपर्क में आ रहे हैं।

3. ग्लोकलाइज़ेशन: इवाबुची (2002) द्वारा प्रस्तुत यह अवधारणा स्थानीय संस्कृतियों के अनुकूल वैश्विक मीडिया सामग्री के अनुकूलन को संदर्भित करती है। ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म अक्सर उपशीर्षक, डबिंग और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक मार्केटिंग रणनीतियों के माध्यम से अपनी सामग्री को स्थानीयकृत करते हैं, जिससे वैश्विक सामग्री स्थानीय दर्शकों के साथ प्रतिध्वनित होती है।

शर्मा (2018) ओवर-द-टॉप (ओटीटी) मीडिया प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध भारतीय वेब सीरीज में लैंगिक भूमिकाओं और आपत्तिजनक भाषा के प्रतिनिधित्व का विश्लेषण करते हैं। अध्ययन में तीन लोकप्रिय भारतीय वेब सीरीज की जांच की गई है, जिसमें पुरुष और महिला पात्रों के चित्रण और पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं के प्रति उनके पालन की जांच की गई है। शोध पत्र इन वेब सीरीज में हाशिए के समुदायों के खिलाफ अपमानजनक और अपमानजनक भाषा के प्रचलन का भी पता लगाता है। निष्कर्ष बताते हैं कि भारतीय वेब सीरीज अक्सर पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को मजबूत करती हैं, जिसमें पुरुषों को प्रमुख और महिलाओं को विनम्र दिखाया जाता है। इसके अतिरिक्त, अध्ययन से पता चलता है कि भारतीय वेब सीरीज में आपत्तिजनक और अपमानजनक भाषा व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाती है, जो सामाजिक सामंजस्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है और भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण को बढ़ावा दे सकती है।

मैट्रिक्स, एस. (2014) ने निष्कर्ष निकाला है कि "नेटफ्लिक्स प्रभाव" ने किशोरों की मीडिया उपभोग आदतों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। बिंज-वॉचिंग एक लोकप्रिय प्रवृत्ति बन गई है, जिससे किशोरों को निर्धारित प्रोग्रामिंग की प्रतीक्षा किए बिना अपनी सुविधानुसार सामग्री तक पहुंचने की अनुमति मिलती है। ऑन-डिमांड डिजिटल मीडिया की उपलब्धता ने मीडिया की खपत में वृद्धि की है, जिससे अत्यधिक स्क्रीन समय के संभावित नकारात्मक प्रभावों के बारे में चिंताएं बढ़ गई हैं। हालाँकि, "नेटफ्लिक्स प्रभाव" ने किशोरों को विविध सामग्री का पता लगाने और साथियों के साथ सोशल मीडिया चर्चाओं में शामिल होने के अवसर भी प्रदान किए हैं। माता-पिता, शिक्षकों और नीति निर्माताओं के लिए "नेटफ्लिक्स प्रभाव" के प्रभावों की निगरानी जारी रखना और किशोरों के लिए ऑन-डिमांड डिजिटल मीडिया उपभोग के लाभों और जोखिमों को संतुलित करने के तरीके खोजना महत्वपूर्ण है।

चट्टोपाध्याय, ए. (2020) ने भारतीय नेटिज़न्स पर वेब सीरीज़ के मनोवैज्ञानिक प्रभाव की जांच करने के लिए मिश्रित-विधि दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए एक अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि युवा दर्शकों को ऑनलाइन सीरीज़ और फिल्मों से काफी नुकसान हो सकता है जो महिलाओं को नए लेकिन रूढ़िवादी तरीकों से चित्रित करना जारी रखती हैं।

रावल, दीपमाकुमार महेशकुमार (2020) ने अपने अध्ययन "युवाओं पर वेब सीरीज के प्रभाव और लोकप्रियता पर एक अध्ययन" में इस बात पर प्रकाश डाला है कि हाल के वर्षों में दुनिया भर में वेब शो की लोकप्रियता में वृद्धि ने दर्शकों को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर देखने के लिए प्रभावशाली सामग्री प्रदान की है। शोध इस बात पर केंद्रित है कि युवा, विशेष रूप से एक विशिष्ट आयु वर्ग के लोग इंटरनेट का किस तरह से व्यापक रूप से उपयोग करते हैं, जिससे वेब सीरीज निर्माता और प्लेटफॉर्म युवा-केंद्रित सामग्री का निर्माण करते हैं। ओटीटी प्लेटफॉर्म का मुंह-ज़बानी और सोशल मीडिया के ज़रिए काफ़ी प्रचार किया जाता है। वयस्क कम से कम एक से दो घंटे या उससे ज़्यादा समय वेब सीरीज़ देखने में बिताते हैं।

शोध पद्धति

वैश्विक रुझानों और स्थानीय अनुकूलन के संदर्भ में ओटीटी सामग्री के सांस्कृतिक प्रभाव का पता लगाने के लिए, यह शोध गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों शोध विधियों का उपयोग किया गया है। इन विधियों के संयोजन से सांस्कृतिक गतिशीलता का व्यापक विश्लेषण संभव हो पाया। शोध पद्धति में मिश्रित-विधि दृष्टिकोण शामिल है, जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक डेटा संग्रह और विश्लेषण तकनीकों का संयोजन होता है। यह दृष्टिकोण शोध प्रश्नों की समग्र समझ सुनिश्चित करता है। ओटीटी सामग्री उपभोक्ताओं के व्यक्तिपरक अनुभवों और धारणाओं में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए गहन साक्षात्कार और सामग्री विश्लेषण सहित गुणात्मक शोध विधियों का उपयोग किया गया है। ये विधियाँ ओटीटी सामग्री के संबंध में सांस्कृतिक पहचान, भाषाई अनुकूलन और सामाजिक व्यवहार की खोज की अनुमति देती हैं। ऑनलाइन सर्वेक्षण जैसी मात्रात्मक शोध विधियों का उपयोग ओटीटी सामग्री उपभोक्ताओं के बड़े नमूने के उपभोग पैटर्न, वरीयताओं और धारणाओं पर डेटा एकत्र करने के लिए किया गया है। यह डेटा ओटीटी सामग्री के सांस्कृतिक प्रभाव को समझने के लिए एक सांख्यिकीय आधार प्रदान करेगा। इस शोध के लिए काई-स्क्वायर परीक्षण विशेष रूप से उपयुक्त है क्योंकि यह दो श्रेणीबद्ध चर के बीच संबंधों की जांच करने की अनुमति देता है। काई-स्क्वायर परीक्षण लागू करके, हम यह निर्धारित कर सकते हैं कि जनसांख्यिकीय कारकों (जैसे आयु, लिंग और शैक्षिक स्तर) और ओटीटी सामग्री उपभोग से संबंधित श्रेणीबद्ध परिणामों (जैसे सामग्री प्रकार की प्राथमिकताएँ, प्लेटफ़ॉर्म विकल्प या कथित सांस्कृतिक प्रभाव) के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध है या नहीं।

डेटा विश्लेषण

टेबल:-1.आयु समूह और सामग्री प्रकार वरीयता के बीच संबंध

आयु समूह	स्थानीय सामग्री	वैश्विक सामग्री	दोनों
18-24	15	20	10
25-34	10	30	15
35-44	5	20	10
45 और उससे अधिक	5	10	5

अपेक्षित आवृत्तियाँ:

आयु समूह	स्थानीय सामग्री	वैश्विक सामग्री	दोनों
18-24	10.16	23.23	11.61
25-34	12.42	28.39	14.19
35-44	7.9	18.06	9.03
45 और उससे अधिक	4.52	10.32	5.16

व्याख्या:

काई-स्क्वायर सांख्यिकी 5.03 है, जिसका p-मान 0.540 है। चूँकि p-मान 0.05 से अधिक है, इसलिए हम शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहे, जो यह सुझाव देता है कि उत्तरदाताओं के बीच आयु समूह और सामग्री प्रकार की प्राथमिकता के बीच कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। यह दर्शाता है कि उत्तरदाताओं का आयु समूह ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म पर स्थानीय, वैश्विक या मिश्रित सामग्री के लिए उनकी प्राथमिकता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं करता है।

2. लिंग और सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव के बीच संबंध

अपेक्षित आवृत्तियाँ:

लिंग	कोई प्रभाव नहीं	मध्यम प्रभाव	महत्वपूर्ण प्रभाव
पुरुष	18	42	30
महिला	12	28	20

व्याख्या:

काई-स्क्वायर सांख्यिकी 0.79 है, जिसका p-मान 0.672 है। चूँकि p-मान 0.05 से अधिक है, इसलिए हम शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहे, जो यह सुझाव देता है कि लिंग और सामाजिक व्यवहार पर ओटीटी सामग्री के प्रभाव के बीच कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। इसका तात्पर्य यह है कि उत्तरदाताओं का लिंग उनके सामाजिक व्यवहार पर ओटीटी सामग्री के कथित प्रभाव को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं करता है।

3. शैक्षिक स्तर और भाषाई अनुकूलन के बीच संबंध

अपेक्षित आवृत्तियाँ:

शिक्षा स्तर	कोई अनुकूलन नहीं	कुछ अनुकूलन	महत्वपूर्ण अनुकूलन
हाई स्कूल	8	14	8
स्नातक डिग्री	17.33	30.33	17.33
स्नातकोत्तर डिग्री	14.67	25.67	14.67

व्याख्या:

काई-स्क्वायर सांख्यिकी 5.87 है, जिसका p-मान 0.209 है। चूँकि p-मान 0.05 से अधिक है, इसलिए हम शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करने में विफल रहे, जो यह सुझाव देता है कि ओटीटी सामग्री के कारण शैक्षिक स्तर और भाषाई अनुकूलन के बीच कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध नहीं है। यह दर्शाता है कि उत्तरदाताओं की शैक्षिक पृष्ठभूमि ओटीटी सामग्री का उपभोग करते समय उनके भाषाई अनुकूलन के स्तर को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं करती है।

टेबल 4. : ओ.टी. घंटे/सप्ताह और सांस्कृतिक पहचान पर प्रभाव

ओटीटी घंटे/सप्ताह	कोई प्रभाव नहीं	मध्यम प्रभाव	महत्वपूर्ण प्रभाव	कुल
5 घंटे से कम	8	5	2	15
5-10 घंटे	2	15	8	25
11-20 घंटे	0	20	15	35
20 घंटे से ज़्यादा	0	10	15	25
कुल	**10**	**50**	**40**	**100**

अपेक्षित आवृत्तियाँ:

ओटीटी घंटे/सप्ताह	कोई प्रभाव नहीं	मध्यम प्रभाव	महत्वपूर्ण प्रभाव
5 घंटे से कम	1.5	7.5	6
5-10 घंटे	2.5	12.5	10
11-20 घंटे	3.5	17.5	14
20 घंटे से ज़्यादा	2.5	12.5	10

व्याख्या:

काई-स्क्वायर सांख्यिकी 42.10 है, जिसका p-मान लगभग 1.76×10 है, जो 0.05 के सामान्य महत्व स्तर से बहुत नीचे है। यह ओटीटी घंटों/सप्ताह की संख्या और सांस्कृतिक पहचान पर प्रभाव के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध को इंगित करता है। इस प्रकार, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म पर बिताए गए समय की मात्रा उत्तरदाताओं के बीच सांस्कृतिक पहचान पर कथित प्रभाव से महत्वपूर्ण रूप से जुड़ी हुई है।

परिणाम एवं चर्चा

शोध के परिणाम स्थानीय संस्कृतियों पर ओटीटी सामग्री के सांस्कृतिक प्रभाव की व्यापक समझ प्रदान करते हैं, जो भाषाई अनुकूलन, सांस्कृतिक पहचान की पुनर्परिभाषा और सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

स्थानीय संस्कृतियों पर ओटीटी सामग्री का प्रभाव

शोध के निष्कर्ष के अनुसार ओटीटी सामग्री का स्थानीय संस्कृतियों पर सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक व्यवहार दोनों के संदर्भ में महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म पर वैश्विक सामग्री के उपभोग ने सांस्कृतिक पहचान की पुनर्परिभाषा को जन्म दिया है, जिसमें व्यक्ति अपनी स्थानीय सांस्कृतिक जड़ों को बनाए रखते हुए वैश्विक सांस्कृतिक मानदंडों के साथ तेजी से पहचान कर रहे हैं। यह दोहरी पहचान वैश्वीकरण के युग में सांस्कृतिक पहचान की संकर प्रकृति को दर्शाती है।

निष्कर्ष यह भी संकेत देते हैं कि ओटीटी सामग्री सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करती है, विशेष रूप से भाषा के उपयोग और संचार पैटर्न के संदर्भ में। उदाहरण के लिए, ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म पर अंग्रेजी भाषा की सामग्री की लोकप्रियता ने गैर-अंग्रेजी बोलने वाले दर्शकों के बीच रोजमर्रा की बातचीत में अंग्रेजी वाक्यांशों और अभिव्यक्तियों के उपयोग को बढ़ा दिया है। इसके

अतिरिक्त, वैश्विक सामग्री में सामाजिक मानदंडों और मूल्यों के चित्रण ने स्थानीय दर्शकों के सामाजिक मुद्दों को समझने और उनसे जुड़ने के तरीके को प्रभावित किया है।

भाषाई अनुकूलन, सांस्कृतिक पहचान की पुनर्परिभाषा और सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन

भाषाई अनुकूलन ओटीटी सामग्री की खपत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शोध से पता चलता है कि स्थानीय दर्शकों के लिए वैश्विक सामग्री को सुलभ बनाने के लिए उपशीर्षक, डबिंग और भाषाई अनुकूलन के अन्य रूप आवश्यक हैं। हालाँकि, भाषाई अनुकूलन में स्थानीय भाषा में नए शब्दों, वाक्यांशों और संचार शैलियों को शामिल करना भी शामिल है, जिससे लोगों के संवाद करने के तरीके में बदलाव आता है।

सांस्कृतिक पहचान की पुनर्परिभाषा इस शोध का एक और महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म पर विविध सांस्कृतिक सामग्री के संपर्क में आने से एक "वैश्वीकृत" सांस्कृतिक पहचान का उदय हुआ है, जहाँ व्यक्ति अपनी स्थानीय संस्कृति और ओटीटी सामग्री में चित्रित वैश्विक संस्कृति दोनों से पहचान करते हैं। यह दोहरी पहचान डिजिटल युग में सांस्कृतिक पहचान की जटिल और परिवर्तनशील प्रकृति को दर्शाती है।

शोध ओटीटी सामग्री की खपत के परिणामस्वरूप सामाजिक व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों पर भी प्रकाश डालता है। उदाहरण के लिए, वैश्विक सामग्री में लिंग भूमिकाओं, पारिवारिक गतिशीलता और सामाजिक संबंधों के चित्रण ने स्थानीय दर्शकों के अपने जीवन के इन पहलुओं को समझने और नेविगेट करने के तरीके को प्रभावित किया है। निष्कर्ष बताते हैं कि ओटीटी सामग्री मौजूदा सामाजिक मानदंडों और मूल्यों को सुदृढ़ और चुनौती दे सकती है, जिससे सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन आ सकता है।

चर्चा अनुभाग शोध से प्राप्त परिणामों की व्याख्या करता है और विश्लेषण प्रदान करता है कि स्थानीय दर्शक ओटीटी सामग्री में वैश्विक रुझानों के साथ कैसे अनुकूलन करते हैं।

प्राप्त परिणामों की व्याख्या

इस शोध के परिणाम वैश्विक मीडिया सामग्री और स्थानीय सांस्कृतिक अनुकूलन के बीच जटिल संबंधों को उजागर करते हैं। निष्कर्ष बताते हैं कि जहाँ ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म में सांस्कृतिक पहचान को प्रभावित करने और उसे नया रूप देने की क्षमता है, वहीं वे स्थानीय संस्कृतियों को वैश्विक मीडिया परिदृश्य में खुद को मुखर करने के अवसर भी प्रदान करते हैं। स्थानीय और वैश्विक दोनों संस्कृतियों के साथ दोहरी पहचान डिजिटल युग में सांस्कृतिक पहचान की गतिशील प्रकृति को दर्शाती है, जहाँ व्यक्ति एक साथ कई सांस्कृतिक क्षेत्रों में नेविगेट कर सकते हैं।

भाषाई अनुकूलन पर ओटीटी सामग्री का प्रभाव विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वैश्विक सामग्री से स्थानीय भाषाओं में नए शब्दों और वाक्यांशों का समावेश दर्शाता है कि मीडिया उपभोग सीधे भाषा के उपयोग को कैसे प्रभावित कर सकता है। यह भाषाई अनुकूलन न केवल वैश्विक सामग्री की खपत को सुविधाजनक बनाता है बल्कि स्थानीय भाषाओं के विकास में भी योगदान देता है, पारंपरिक भाषाई तत्वों को नए, वैश्विक प्रभावों के साथ मिलाता है।

इस शोध में पाये गए सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन ओटीटी सामग्री के व्यापक सांस्कृतिक प्रभाव का संकेत देते हैं। वैश्विक सामग्री में सामाजिक मानदंडों, मूल्यों और रिश्तों का चित्रण स्थानीय दर्शकों को नए दृष्टिकोण प्रदान करता है, पारंपरिक मानदंडों को चुनौती देता है और सामाजिक मुद्दों पर चर्चा को बढ़ावा देता है। यह बदले में, व्यवहार में बदलाव ला सकता है, क्योंकि व्यक्ति और समुदाय नए विचारों और सोचने के तरीकों को अपनाते हैं।

वैश्विक रुझानों के साथ स्थानीय दर्शकों के अनुकूलन का विश्लेषण

ओटीटी सामग्री में वैश्विक रुझानों के लिए स्थानीय दर्शकों का अनुकूलन एक बहुआयामी प्रक्रिया है। एक ओर, स्थानीय दर्शक वैश्विक सामग्री के साथ सक्रिय रूप से जुड़ते हैं, नए सांस्कृतिक अभ्यासों और विचारों को अपनाते हैं जो उनके अनुभवों और आकांक्षाओं के साथ प्रतिध्वनित होते हैं। दूसरी ओर, वे ऐसी सामग्री भी चाहते हैं जो उनकी अपनी सांस्कृतिक पहचान और अनुभवों को दर्शाती हो, जिससे वैश्विक सामग्री के स्थानीयकृत संस्करण सामने आते हैं।

इस संदर्भ में "ग्लोकलाइज़ेशन" की अवधारणा विशेष रूप से प्रासंगिक है। ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म अक्सर उपशीर्षक, डबिंग और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक मार्केटिंग रणनीतियों को प्रदान करके अपनी सामग्री को स्थानीयकृत करते हैं, जिससे वैश्विक सामग्री स्थानीय दर्शकों के साथ प्रतिध्वनित होती है। यह ग्लोकलाइज़ेशन प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि वैश्विक सामग्री को

केवल स्थानीय संस्कृतियों पर थोपा नहीं जाता है, बल्कि स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भों में फिट होने के लिए अनुकूलित किया जाता है। नतीजतन, स्थानीय दर्शक सांस्कृतिक पहचान और अपनेपन की भावना को बनाए रखते हुए वैश्विक सामग्री का आनंद ले सकते हैं।

इसके अलावा, शोध से संकेत मिलता है कि स्थानीय दर्शक वैश्विक सामग्री के निष्क्रिय उपभोक्ता नहीं हैं; वे जिस सामग्री का उपभोग करते हैं, उसके अर्थों की सक्रिय रूप से व्याख्या और बातचीत करते हैं। यह सक्रिय सहभागिता स्थानीय दर्शकों को वैश्विक सांस्कृतिक तत्वों को अपने सांस्कृतिक ढांचे में शामिल करने का अवसर प्रदान करती है, जिससे नई, संकर सांस्कृतिक पहचान बनती है जो स्थानीय और वैश्विक दोनों प्रभावों को प्रतिबिंबित करती है।

निष्कर्ष

वैश्विक रुझानों और स्थानीय अनुकूलन के संदर्भ में ओटीटी सामग्री के सांस्कृतिक प्रभाव पर किए गए शोध से मीडिया अध्ययन और सांस्कृतिक विश्लेषण दोनों के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थों के साथ कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आए हैं।

मुख्य निष्कर्ष और उनके निहितार्थ

1. सांस्कृतिक पहचान की पुनर्परिभाषा: शोध संकर सांस्कृतिक पहचान के उद्भव पर प्रकाश डालता है, जहाँ व्यक्ति स्थानीय और वैश्विक दोनों संस्कृतियों के साथ पहचान करते हैं। सांस्कृतिक पहचान की यह पुनर्परिभाषा डिजिटल युग में संस्कृति की गतिशील और तरल प्रकृति को दर्शाती है, जहाँ व्यक्ति कई सांस्कृतिक प्रभावों को नेविगेट और एकीकृत कर सकते हैं।

2. भाषाई अनुकूलन: निष्कर्ष वैश्विक सामग्री की खपत में भाषाई अनुकूलन के महत्व को रेखांकित करते हैं। वैश्विक सामग्री से नए शब्दों और वाक्यांशों को स्थानीय भाषाओं में शामिल करना दर्शाता है कि मीडिया की खपत कैसे भाषाई परिवर्तन को प्रेरित कर सकती है और भाषा के विकास में योगदान दे सकती है।

3. सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन: शोध से पता चलता है कि ओटीटी सामग्री पारंपरिक मानदंडों को चुनौती देकर और सामाजिक मुद्दों पर नए दृष्टिकोण पेश करके सामाजिक व्यवहार को प्रभावित कर सकती है। यह प्रभाव व्यवहार में बदलाव ला सकता है क्योंकि व्यक्ति और समुदाय नए विचारों और सोचने के तरीकों को अपनाते हैं।

4. ग्लोकलाइज़ेशन और दर्शकों की सहभागिता: ग्लोकलाइज़ेशन की अवधारणा यह समझने के लिए महत्वपूर्ण है कि वैश्विक सामग्री को स्थानीय संस्कृतियों के अनुकूल कैसे बनाया जाता है। शोध से पता चलता है कि स्थानीय दर्शक वैश्विक सामग्री के साथ सक्रिय रूप से जुड़ते हैं, अपने स्वयं के सांस्कृतिक ढांचे के भीतर इसके अर्थों की व्याख्या और बातचीत करते हैं।

शोध की सीमाएँ और भविष्य के अध्ययनों के लिए सुझाव

हालाँकि यह शोध ओटीटी सामग्री के सांस्कृतिक प्रभाव के बारे में मूल्यवान जानकारी प्रदान करता है, लेकिन इसकी सीमाओं को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। शोध नमूना, हालांकि विविध है, लेकिन वैश्विक आबादी का पूरी तरह से प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है, और निष्कर्ष सभी सांस्कृतिक संदर्भों के लिए सामान्यीकृत नहीं हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, शोध मुख्य रूप से ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म पर वैश्विक सामग्री की खपत पर केंद्रित है, और आगे के अध्ययन इन प्लेटफ़ॉर्म पर स्थानीय सामग्री के उत्पादन और वितरण का पता लगा सकते हैं।

भविष्य के शोध OTT सामग्री के दीर्घकालिक सांस्कृतिक प्रभाव की भी जाँच कर सकते हैं, यह जाँच करते हुए कि वैश्विक सामग्री के निरंतर संपर्क ने समय के साथ सांस्कृतिक पहचान, भाषा के उपयोग और सामाजिक व्यवहार को कैसे प्रभावित किया है। इसके अतिरिक्त, अध्ययन ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म के सांस्कृतिक प्रभाव को आकार देने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आभासी वास्तविकता जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों की भूमिका का पता लगा सकते हैं।

संदर्भ

1. स्ट्रॉबहार, (2007). विश्व टेलीविजन: वैश्विक से स्थानीय तक। https://doi.org/10.4135/9781452204147
2. एलन, मैथ्यू. (2002). वैश्वीकरण को पुनः केंद्रित करना: लोकप्रिय संस्कृति और जापानी ट्रांसनेशनलिज्म. इवाबुची कोइची द्वारा. डरहम, एन.सी. ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस
3. शर्मा, के. (2018)। भारतीय वेब सीरीज ओटीटी मीडिया कंटेंट में उभरती हुई लैंगिक भूमिका और अभद्र भाषा का प्रतिनिधित्व। जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च।
4. मैट्रिक्स, एस. (2014). नेटफ्लिक्स प्रभाव: किशोर, बिंज वॉचिंग, और ऑन-डिमांड डिजिटल मीडिया रुझान। ज्यूनेस: युवा लोग, पाठ, संस्कृतियाँ.
5. चट्टोपाध्याय, ए. (2020). वेब सीरीज और वेब मूवीज और भारत में नेटिज़न्स पर उनका मनोवैज्ञानिक-सामाजिक प्रभाव। द एशियन थिंकर, 07. https://theasianthinker.com/wpcontent/uploads/2020/10/6.-Web-Series-and-Web-Movies-and-their-psychosociological-impact-on-netizens-in-India-Anindita-Chattopadhyay.pdf
6. भारत में पारंपरिक टीवी से ओटीटी प्लेटफॉर्म पर बदलाव को प्रभावित करने वाले कारक, रोहित जैकब जोस, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड साइंस एंड टेक्नोलॉजी वॉल्यूम 29.
7. भारत में ओवर-द-टॉप मीडिया प्लेटफॉर्म पर COVID-19 के प्रभाव का विश्लेषण, दिव्या मदनानी, सेमिला फर्नांडीस, निधि मदनानी, https://www.emerald.com/insight/1742 7371.htm
8. रश्मि, सी.पी., और सूद, आर.एस. (2018)। भारतीय अपराध वेब सीरीज में महिलाओं का चित्रण: एक कथात्मक विश्लेषण और सर्वेक्षण। तुर्की ऑनलाइन जर्नल ऑफ क्वालिटेटिव इंक्वायरी, 12(9)। शर्मा, के. (2018).
9. भारतीय वेब सीरीज ओटीटी मीडिया सामग्री में उभरती हुई लैंगिक भूमिका और अभद्र भाषा का प्रतिनिधित्व। उभरती हुई प्रौद्योगिकियों और नवीन अनुसंधान का जर्नल। सुंदरवेल, ई., और एलंगोवन, एन. (2017).
10. भारत में ओवर-द-टॉप (ओटीटी) वीडियो सेवाओं का उद्भव और भविष्य: विश्लेषणात्मक शोध। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिजनेस, मैनेजमेंट एंड सोशल रिसर्च.